पाठ-10

अकबर का युग (1556-1605 ई0)

बाबर ने भारत में मुगल वंश की नींव रखी परन्तु उसे स्थायित्व प्रदान करने का कार्य अकबर ने किया। गुप्त वंश के लगभग 1000 वर्ष बाद अकबर ने भारत को पुनः एकता के सूत्र में बाँधा। अकबर एक महान विजेता होने के साथ ही प्रजा के हित में कार्य करने वाला शासक था।

अकबर का पूरा नाम जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर था। उनके पिता का नाम हुमायँू तथा माता का नाम हमीदा बानो बेगम था। पिता की मृत्यु के समय अकबर केवल तेरह वर्ष का था, लगभग आपकी उम्र का। हुमायूँ के विश्वास पात्र बैरम खाँ ने अकबर का राज्याभिषेक किया। अकबर अपने संरक्षक बैरम खाँ की देख-रेख में राज-काज करने लगा।

अकबर

पानीपत का द्वितीय युद्ध (1556 ई0)

अफगान राजा के हिन्दू सेनापति हेमू ने आगरा और दिल्ली पर अधिकार कर लिया जिसे मुक्त कराने के लिए 1556 ई0 में अकबर और हेमू के बीच पानीपत का द्वितीय युद्ध हुआ। हेमू की सेना पराजित हुई और पंजाब, आगरा तथा दिल्ली अकबर के अधिकार में हो गये।

साम्राज्य विस्तार

अकबर अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहता था। इसके लिए उसने सीधे संघर्ष करने, वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने, अधीनता स्वीकार करने वालों को शासन में पद देने तथा

मित्रता करने की नीति अपनायी।

अकबर राजपूतों के साथ मित्रता का महत्व समझता था। अतः उसने राजपूत राजपरिवारों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर अपनी स्थिति को सुदृढ़ बनाया।

अकबर राजपूतों के साथ मित्रता का महत्त्व समझता था। अतः उसने राजपूत राजपरिवारों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर अपनी स्थिति को सुदृढ़ बनाया।

अकबर ने अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए अन्य विजय भी कीं। अरब, यूरोप, दक्षिण-पूर्व एशिया से व्यापार की दृष्टि से गुजरात और बंगाल प्रान्त बहुत महत्त्वपूर्ण थे, जिन पर अकबर ने अपना अधिकार कर लिया। इससे राज्य की आमदनी बढ़ी। दक्षिण में अकबर का अहमदनगर की रानी चाँदबीबी से युद्ध हुआ। अकबर ने अहमदनगर के कुछ भागों को अपने अधिकार में कर लिया। उसने गोंडवाना (मध्य प्रदेश) की शासिका दुर्गावती को हराया। इस तरह अकबर ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की, जो कश्मीर से अहमदनगर तथा काबुल से बंगाल तक फैला हुआ था।

ने आमेर के राजपूत राजा, राजा भारमल की पुत्री से विवाह किया।
खुशी का दिन अकबर से हमारा जुड़ गया।
हाँ, आप सही कहते हैं, महाराज।
का यह विवाह हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच सद्भावना को बढ़ाने की एक कोशिश थी, इससे उसकी धार्मिक
पता चलता है।

अकबर ने अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए अन्य विजय भी कीं। अरब, यूरोप, दक्षिण–पूर्व एशिया से व्यापार की दृष्टि से गुजरात और बंगाल काफी बहुत महत्वपूर्ण थे। जिन पर अकबर ने अपना अधिकार कर लिया। इससे राज्य की आमदनी बढ़ी। दक्षिण में अकबर का अहमदनगर की रानी चाँदबीबी से युद्ध हुआ। अकबर ने अहमदनगर के कुछ भागों को अपने अधिकार में कर लिया। उसने गोंडवाना (मध्य प्रदेश) की शासिका दुर्गावती को हराया।

← चाँदबीबी अपनी सेना को मुगल सेना पर आक्रमण का आदेश देते हुए

इस तरह अकबर ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की, जो कश्मीर से अहमदनगर तथा काबुल से बंगाल तक फैला हुआ था।

सोचिए और बताइए कि अकबर से पूर्व उसके साम्राज्य से बड़ा किस राजा/वंश का साम्राज्य था।

.....
.....।

शासन व्यवस्था

अकबर ने साम्राज्य के प्रशासन को सुचारु रूप से चलाने के लिए साम्राज्य को कई स्तरों में बाँट रखा था। प्रशासन के कार्यों की देख-रेख के लिए केन्द्र से लेकर गाँव तक जिम्मेदार अधिकारियों की नियुक्ति की थी।

मनसबदारी व्यवस्था

अकबर बिना सुदृढ़ सेना के न तो साम्राज्य का विस्तार कर सकता था, और न ही उस पर अपना अधिकार बनाये रख सकता था। इसके लिए अकबर को अपने सैनिक-अधिकारियों

और सिपाहियों को सुगठित करना था। उसने इन दोनों लक्ष्यों की पूर्ति मनसबदारी प्रणाली से की।

शासन का काम चलाने वाले कई अधिकारी और कर्मचारी होते हैं। मुग़ल काल में उन्हें मनसबदार कहा जाता था। पूरे मुग़ल साम्राज्य में हज़ारों छोटे-बड़े मनसबदार यानी शासकीय अधिकारी व कर्मचारी थे।

मनसबदार साम्राज्य में बादशाह के कानून और आदेश लागू करते थे। बादशाह के खिलाफ अगर कोई विद्रोह करे तो मनसबदार विद्रोह दबाते थे। मुग़ल साम्राज्य की रक्षा करना और दूसरे क्षेत्रों में मुगल वंश का राज्य फैलाना भी मनसबदारों का काम था।

उन दिनों मुग़ल अमीरों यानी बड़े मनसबदारों को जितना वेतन मिलता था, उतना दुनिया के किसी भी अन्य राज्य के अधिकारियों को नहीं मिलता था। तभी तो मुग़ल अमीर बड़ी शान-शौकत से रहते थे।

अकबर काल का प्रशासनिक ढाँचा

साम्राज्य के अंग जिम्मेदारी कार्य

(क)केन्द्र बादशाह सेना, प्रशासन व न्याय

दीवान वित्तीय नियंत्रण

(ख)प्रान्तीय सूबेदार कानून, फौजदारी

प्रान्तीय दीवान राजस्व वसूली, आय-व्यय विवरण

कोतवाल नगर का प्रशासन

(ग)परगना शिकदार कानून एवं व्यवस्था

आमिल राजस्व वसूली

कानूनगो उपज एवं राजस्व का विवरण

फोतदार कोष की व्यवस्था

(घ)गाँव मुकद्दम (प्रधान) कानून एवं व्यवस्था

पटवारी राजस्व का विवरण

चौकीदार सुरक्षा का दायित्व

अकबर द्वारा निश्चित प्रशासनिक ढाँचा आने वाले मुगलों के प्रशासनिक ढाँचे का आधार बना। आज भी उत्तर प्रदेश में कई पदनाम व प्रशासनिक क्षेत्र इन नामों से जाने जाते हैं।

अकबर का वित्तीय-प्रबन्धन

राज्य की आय के दो प्रधान साधन थे। भूमि का लगान तथा व्यापार पर कर। प्रत्येक गाँव का लगान निश्चित कर दिया गया था। किसानों से उपज का एक तिहाई भाग लगान के रूप में वसूल किया जाता था। किसी भी भूमि में एक निश्चित उपज न होने के कारण अकबर लगान का प्रबन्ध समय-समय पर कराने के पक्ष में था। उसने भूमि की नाप कराकर लगान का लेखा बनाने का कार्य राजा टोडरमल को सौंपा। लगान की इस व्यवस्था से किसानों को सुविधा हुई। उनको अब मालूम रहता था कि उपज का कितना भाग उनको लगान में देना है।

अकबर कालीन सिक्के

अकबर कालीन सोने का सिक्का

अकबर कालीन चौकोर चाँदी का सिक्का

कृषि एवं भू-राजस्व प्रबन्धन

कृषि मुगल बादशाहों की समृद्धि का आधार थी। कृषि उपज की वृद्धि के लिए विशेष ध्यान दिया गया। इस समय एक ही खेत से विभिन्न फसलों का उत्पादन किया जाता था। कृषि क्षेत्र

का विस्तार किया गया। भू-प्रबन्धन में हमें प्राचीन भारत से लेकर मध्यकाल तक एकरूपता दिखाई देती है। भू-कर निर्धारण के लिए पूरे राज्य की पैमाइश की गई। भूमि की पैमाइश 'गज-ए-इलाही' द्वारा की जाती थी। यह पूर्ववर्ती गज-ए-सिकंदरी का परिवर्तित रूप था। खेत के माप के लिए बीघा का प्रयोग होता था। एक बीघा साठ (60) गज लम्बा व साठ (60) गज चौड़ा होता था।

अकबर: सामाजिक सामन्जस्य के प्रयास

अकबर जानता था कि हिन्दुओं के सहयोग के बिना वह न तो साम्राज्य का विस्तार कर सकता था और न ही साम्राज्य पर अपना अधिकार बनाये रख सकता था। इसके लिए उसने अनेक हिन्दुओं को मनसबदार बनाया इनमें अधिकांश राजपूत राजा थे जिनसे अकबर ने वैवाहिक सम्बन्ध बनाये तथा व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित किये।

अकबर की धार्मिक सहिष्णुता का परिचय फतेहपुर सीकरी में इबादत खाना के निर्माण से पता चलता है जिसमें वह सभी धर्मों के गुरुओं से उनके धर्म की अच्छी बातों को सुनता और उन पर चर्चा करता। उसने इस्लाम, हिन्दू, फारसी, जैन, ईसाई आदि धर्मों की अच्छी बातों को लेकर एक नए धार्मिक मार्ग दीन-ए-इलाही की रूपरेखा बनाई। इसका उद्देश्य एकता स्थापित करना था। अकबर ने सुलहकुल की नीति अपनायी जिससे इतने बड़े राज्य का काम शान्तिपूर्ण ढंग से चल सके तथा सब लोगों का समर्थन मिलता रहे। इस नीति को अकबर के बाद आने वाले मुगल बादशाहों ने भी अपनाया। इस नीति पर हम भक्ति एवं सूफी आन्दोलनों का स्पष्ट प्रभाव देख सकते हैं।

इस नीति का पालन करते हुए राजमहल में अकबर ने हिन्दू, पारसी आदि धर्मों की कुछ रीतियाँ माननी शुरू कर दीं। गीता, महाभारत, अथर्ववेद, बाइबिल, कुरान, पंचतंत्र, सिंहासनबत्तीसी व विज्ञान की भी कई पुस्तकों का फारसी भाषा मंे अनुवाद कराया गया ताकि फारसी बोलने वाले मुसलमान उन्हें पढ़कर समझ सकें।

अकबर ने हिन्दुओं पर से यात्रा तथा जजिया कर हटा दिया। उसने गैर मुसलमानों के धर्म परिवर्तन की प्रथा को समाप्त किया। इन कार्यों से उसने एक ऐसे साम्राज्य की आधारशिला रखी जो बिना किसी भेदभाव के सभी लोगों के समान अधिकारों पर आधारित था। इस प्रकार अकबर के शासनकाल में राज्य अनिवार्य रूप से धर्म निरपेक्ष, सामाजिक विषयों में उदार और चेतना तथा सांस्कृतिक एकता को प्रोत्साहन देने वाला बन गया है।

साहित्य

अकबर सदैव विद्वानों से विचार-विमर्श करता था। इस समय की राजभाषा फारसी थी। इस समय अबुल फजल, फैजी, बदायूँनी उच्चकोटि के लेखक तथा साहित्यकार थे। अबुल फजल ने 'अकबरनामा' की रचना की। महाभारत तथा रामायण का फारसी में अनुवाद किया गया। अब्दुर्रहीम खानखाना के हिन्दी में लिखे दोहे आज भी लोकप्रिय हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरित मानस' की रचना भी इसी समय की। इस समय हमारे देश में कागज पर लिखने का कार्य आरम्भ हो गया था। यद्यपि इसकी शुरुआत चीन में हुई। प्रमुख संगीतकार तानसेन अकबर के प्रमुख दरबारियों में थे।

और भी जानिए

अकबर के नवरत्न

अकबर विद्वानों का आश्रयदाता था। उसके दरबार में अनेक प्रसिद्ध विद्वान थे। मुल्ला दो प्याजा, हकीम हुमाम, अब्दुर्रहीम खानखाना, अबुल फज़ल, तानसेन, राजा मानसिंह, राजा टोडरमल, फैजी एवं राजा बीरबल उसके दरबार के 'नवरत्न' थे।

कला

अकबर ने आगरा के निकट फतेहपुर सीकरी नामक नगर का निर्माण कराया और इसे कुछ वर्षों के लिए अपनी राजधानी बनाया। इस नगर में उसने भव्य इमारतों का निर्माण करवाया।

नीचे दिए गए चित्रों को देखकर इन इमारतों के बारे में जानिए।

अकबर द्वारा बनवाया गया एक महल

हवा लेने के लिए बना हवा महल

फतेहपुर सीकरी

दीवान-ए-आम, आगरा का लालकिला

बुलन्द दरवाजा, फतेहपुर सीकरी

(यह अकबर ने अपनी गुजरात

विजय स्मारक के रूप में बनवाया था)

दीवान-ए-खास

सलीम चिश्ती की दरगाह, आगरा

(अकबर द्वारा निर्मित, किन्तु

शाहजहाँ द्वारा संगमरमर की इमारत में परिवर्तित)

अकबर अपने दीवान-ए-आम में राज्य के लोगों से मुलाकात करता था तथा दीवान-ए-खास में

अपने मंत्रियों से शासन सम्बन्धी मंत्रणा करता था।

जयपुर में भी 'हवा लेने के लिए' पंचमहल की तरह एक इमारत है, उसका नाम लिखिए

.....

.....।

शब्दावली -

इबादतखाना - प्रार्थना गृह

पंचतंत्र - नीति कथाओं की पुस्तक

संरक्षक - नाबालिग की देखभाल के लिये नियुक्त व्यक्ति

दीन-ए-इलाही - अकबर द्वारा चलाया गया धार्मिक मार्ग। दीन-ए-इलाही का अर्थ है एक ईश्वर की उपासना का धर्म।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) अकबर के संरक्षक का नाम क्या था?

(ख) पानीपत का द्वितीय युद्ध कब, कहाँ और किसके मध्य हुआ ?

(ग) अकबर ने अपना साम्राज्य बढ़ाने के लिए क्या नीति अपनाई ?

(घ) हल्दी घाटी का युद्ध कब, कहाँ और किसके मध्य हुआ ?

(ङ) गुजरात और बंगाल विजय से राज्य को क्या लाभ हुआ ?

(च) चाँदबीबी कौन थी?

(छ) अकबर ने धार्मिक सहिष्णुता बढ़ाने के लिए क्या किया ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों में सही विकल्प के सामने (झ) का निशान लगाइए-

(क) हल्दी घाटी का युद्ध हुआ-

1. चाँदबीबी एवं मुगलों के बीच 2. शेरशाह एवं हुमायूँ के बीच

3. मुगल एवं अफगानों के बीच 4. अकबर एवं महाराणा प्रताप के बीच

(ख) फतेहपुर सीकरी का निर्माण कराया-

1. हुमायूँ ने 2. शेरशाह ने 3. अकबर ने 4. खुसरो ने

गतिविधि- 1 रुपया, 2 रुपये, 5 रुपये व 10 रूपये के सिक्कों को अपनी पुस्तिका में छापिए।

प्रोजेक्ट वर्क

पाठ में दिए गए मानचित्र को देखकर अकबर के साम्राज्य के प्रमुख राज्यों की सूची बनाइए तथा भारत के रेखा मानचित्र में उसका साम्राज्य लाल रंग से दिखाइए।